अध्याय – द्वितीय

संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

2.2 संबधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

2.3 पूर्व शोध आकलन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है। चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रकिया है, क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों,ज्ञान कोषों पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधो एंव अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन,परिकल्पनाओं कें निर्माण,अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एंव कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। उसके अभाव में उचित दिशा से अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका हैं, किस विधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो इस दिशा में सफल हो सकता है और न ही आगे बढ़ सकता है।

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभः–

- जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्त्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनःकिया जा सकता है।
- ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्त्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां पर है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है।
- पूर्व साहित्य के अनुरावलोकन से अनुसंधानकर्त्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतःदृष्टि प्राप्त हो सकती है।

- पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य सबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।

- सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

2.3 पूर्व शोध आकलनः–

1 सिंह,एस.के.1988 ने शिक्षक के कक्षा में शाब्दिक संवाद एवं शिक्षक के अध्यापन अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य शिक्षकों के व्यवस्थित प्रक्षेपण का विकास एवं प्रक्षेपण व्यवहार और शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति इनके बीच संबंध निर्धारित करना है। इसके लिए 500 बी.एड.छात्र अध्यापकों को चुना गया था। इसमें प्रश्न उत्तर विधि का उपयोग किया गया था। प्रदत्त संकलन हेतु मिनसोटा शिक्षक अभिवृत्ति सूची एंव कलाण्डरस की विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया था अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति में संबंधित प्रश्न अनुपात में शिक्षकों के अध्यापन विषय ग्रुप चर्चा में सार्थकता पायी गई शिक्षक की अध्यापन अभिवृत्ति और पुर्नाध्यापन में शाब्दिक संवाद में सार्थकता पायी गई।

2 पाण्डे, उषा 1988 ने महिला शिक्षक प्रशिक्षार्थी की शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। निष्कर्ष से पता लगता है कि महिला शिक्षक को अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूचि है। इनके लिये शिक्षण व्यवसाय एक सुवर्ण संधि होती है। क्योंकि दूसरा व्यवसाय जल्दी से नहीं मिल पाता इसीलिए महिला अध्यापकों की शिक्षण अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूचि है।

3 रेडडी,बालकृष्णा पी.1989 ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एंव शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति और व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया, जिसके उद्देश्य व्यवसाय संतुष्टि स्तर अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति और व्यवसाय अभिवृत्ति के स्तर का अध्ययन करना,लिंग,वैवाहिकस्थिति,शैक्षणिक,कुटुम्ब का आकार,अनुभव,उम्र तथा व्यक्तिगत कारक के आधार पर व्यवसाय के संबधों का अध्ययन करना था। इसके लिये

बहुस्तरीय स्तरीकृत याद्विच्छिक न्यादर्श विधि से 300 प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया था। प्रदत्तों के संकलन हेतु व्यवसाय संतोष सूची,शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति सूची,कैटल की 16 पी.एफ.प्रश्नावली का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एंव अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक संबंध होता है। व्यवसाय के विविध कारकों का अभ्यास करने से पता चलता है, कि 7 कारकों के प्रति शिक्षकों में व्यवसाय संतुष्टि देखने को मिलती है। जबकि 9 कारकों के प्रति शिक्षकों में असन्तुष्टि दिखाई देती है। व्यक्तित्व के 4 कारकों और व्यवसाय सूची को जो शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। उसमें सार्थक अन्तर पाया गया।

4 बुद्धिसागर,मीना और सनसनवाल डी.एन.1991 ने बी.एड.प्रशिक्षणार्थियों पर अध्ययन किया है। शिक्षण व्यवसाय के प्रति व्यवहार, बुद्धि,अभिवृत्ति का असर एंव उपलब्धि पर उनके अंतर संबधों का अध्ययन किया है। निष्कर्ष से पता लगता है कि प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि पर उनकी अभिवृत्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा जबकि बुद्धि का उपलब्धि पर प्रभाव दिखाई देता है।

5 रेडडी,,बुम.एन.1991 ने आंध्रप्रदेश के माध्यमिक शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता एंव अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। उपरोक्त शोध कार्य का उद्देश्य शिक्षकों के लिंग,आयु,विभाग एंव प्रवर्ग का अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव जानना है। नियमित बी. एड.के 332 प्रशिक्षणार्थियों एंव 80 माध्यमिक शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु ज।ज टेस्ट एंव अध्यापन अभिवृत्ति रूचि का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये मध्यमान,मानक विचलन,टी अनुपात,सहसंबध गुणांक और काई वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से पता लगता है कि अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता एंव अभिवृत्ति में सार्थक संबध है। लिंग,आयु का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

6 गणपतिदास,1992 ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के आत्म संम्प्रत्यय एंव अध्यापन व्यवसाय संबधी अभिवृत्ति का अध्ययन किया है।

उपरोक्त शोध कार्य में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय संबधी अभिवृत्ति एंव शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के आत्म संम्प्रत्यय का अध्ययन करना यह मुख्य उददेश्य है। नव अध्यापक महाविद्यालय में से 723 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु अहुवालिया की शिक्षक अभिवृत्ति सूची एंव आत्म संम्प्रत्यय मापने का उपयोग किया गया।प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए टी–परीक्षण, पीयरसन के सहसंबध का गुणांक का प्रयोग किया गया। उपरोक्त शोध कार्य में पाया गया कि महिला एंव पुरूष प्रशिक्षार्थी में अध्ययन व्यवसाय संबधी अनुकुल अभिवृत्ति है।

7 श्रीनिवास,वी.1992 ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्त्वि गुण और शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया है,जिसके उददेश्य थे प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के अध्यापन दृष्टिकोण का मापन करना,लिंग,सामूहिक अनुभव और व्यवस्थापन के प्रकार इनके आधार पर प्राथमिक शिक्षकों के दृष्टिकोण की सार्थकता का मापन करना,प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व गुणों का लिंग,अनुभव,समुदाय और व्यवस्थापन के प्रकार के आधार पर मापन करना। शोध कार्य के लिये स्तरीकृत याच्छिक न्यादर्श विधि का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु व्यक्तिगत जानकारी सूची शिक्षक अभिवृत्ति सूची एंव शोधकर्ता निर्मित प्रमाणीकृत एंव मुथ्या द्वारा निर्मित बहुउद्दीपक व्यक्तित्व प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये मध्यमान,मानक विचलन,टी मान,सह संबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष से पता लगता है कि शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग,शिक्षा अनुभव एंव समूह का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। सहानुभूति और अन्तःमुखी व्यक्तित्व के गुणों का शासकीय और अनुदानित विद्यालयों के शिक्षकों पर प्रभाव पड़ता है।

8 पाण्डे,एम.और मखूरी,आर.1999 ने प्रभावशाली और प्रभावहीन शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की प्रभावशीलता तथा

अप्रभावशीलता का अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में आयु व अनुभव के आधार पर अध्ययन करना था। अनुसंधान कार्य में नेहरी जिले के माध्यमिक स्कूल से 100 शिक्षकों को याद्विच्छिक विधि से चयनित किया गया था। प्रदत्त संकलन के लिये कुमार और मुथ्या निर्मित शिक्षक प्रभावशाली मापनी तथा अध्यापन अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये मध्यमान,मानक विचलन और 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से पता लगता है कि अधिक तथा कम अनुभव वाले प्रभावशाली शिक्षकों की अध्यापन संबधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि अधिक प्रभावशाली अनुभव वाले शिक्षकों की अध्ययन व्यवसाय संबधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि अधिक प्रभावशाली अनुभव वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय संबधी अभिवृत्ति सकारात्मक पाई गई । कम अनुभवी प्रभावशाली शिक्षकों से नये अप्रभावशाली शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय संबधी अभिवृत्ति निषेधात्मक पाई गई।

9 निमगडे,व्ही.एस.2004–05 बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के एम.एड.छात्र ने प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। जिसका उददेश्य प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में स्थान,लिंग,अनुभव,शैक्षणिक योग्यता,व्यावसायिक योग्यता,उम्र के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना था। सर्वेक्षण विधि द्वारा 129 अध्यापकों को याद्विच्छिक न्यादर्श विधि से चुना गया था। प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ.एस.पी.अहलुवालिया की अध्यापक अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया था। निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग,स्थान,अनुभव,शैक्षणिक योग्यता,व्यावसायिक योग्यता उम्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

ये सभी अध्ययन जो कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति तथा व्यावसायिक संतुष्टि से संबधित रहे है। वे सभी प्राथमिक विद्यालयों,माध्यमिक विद्यालयों एंव विश्वविद्यालयों के अध्यापकों से संबधित है। विभिन्न शोधकर्ताओं ने भिन्न–भिन्न कारको जैसे–आयु,लिंग,योग्यता,वैवाहिक स्थिति,ऐकेडमिक शिक्षा,स्वतंत्रता एंव सामाजिक मान्यता तथा आत्म सम्मान आदि

कारकों में अध्यापकों की संतुष्टि का अध्ययन किया। और देखा कि उनकी मूल आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये उन्हे वेतन एंव पदोन्नति के रूप में कोई पुरूस्कार नहीं प्राप्त है,इसीलिये अधिकांश अध्यापक असंतुष्ट है।

इस प्रकार संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से यह ज्ञात होता है कि बहुत से शोधकर्ताओं द्वारा माध्यमिक महाविद्यालय एंव विश्वविद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य किया गया है। प्रायः देखा गया है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि के क्षेत्र में बहुत कम अध्ययन हुये है। इसीलिये शोधार्थी ने अनुसंधान कार्य के लिये शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया है।